अमर चित्र कथा

कुंभकर्ण

क्र. ५२८ | रु. ९०



तलाश अपनी जड़ों की

जब वे मुड़ कर अपने बचपन के उन दिनों की ओर देखते हैं, जब उनके व्यक्तित्व का विकास हो रहा था, तब अनेक भारतीय बड़े स्नेह से अमर चित्र कथा की उन सचित्र पुस्तकों को याद करते हैं, जिन्होंने उनके जीवन में अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। यह एसीके – अमरचित्र कथा ही थीं जिन्होंने उन्हें अपनी भव्य विरासत की पहली झलक दिखलाई थी।

अमर चित्र कथा १९६७ में पेश की गयीं। इस समय चुनने के लिए अमर चित्र कथा की ४०० से ज़्यादा पुस्तकें उपलब्ध हैं। संसारभर में इनकी ९ करोड़ से ज्यादा प्रतियां बिक चुकी हैं।

अब अमर चित्र कथा की पुस्तकें और भी बड़े पैमाने पर उपलब्ध हैं – भारतभर में १०००+ पुस्तक विक्रेताओं के पास। अपने नज़दीकी विक्रेता का पता जानने के लिए यहां लॉग ऑन करें : www.ack-media.com. अगर किसी पुस्तक विक्रेता तक पहुंचना आसान न हो तो आप सभी पुस्तकें हमारे ऑनलाइन स्टोर www.amarchitrakatha.com से ख़रीद सकते हैं। हम संसारभर में हर जगह पुस्तकें बड़ी जल्दी पहुंचा देते हैं।

हमारे पुस्तकों के भंडार में से आपको अपनी मनपसंद पुस्तक चुनने में आसानी हो, इसके लिए हमने पुस्तकों को छः वर्गों में विभाजित किया है।

महाकाव्य और पौराणिककथाएँ
महाकाव्यों एवं पुराणों की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ

भारतीय उत्कृष्ठ साहित्य
भारतीय साहित्य की मनमोहक कहानियाँ

हास–परिहास और दंतकथाएँ
सदाबहार लोक कथाएं, दंत कथाएं तथा विवेक और हास्य से भरी कहानियाँ

वीरांगना
वीर पुरुषों तथा महिलाओं की मन छूने वाली कहानियाँ

दिव्यदृष्टा
विचारकों, समाज सुधारकों तथा राष्ट्र निर्माताओं की प्रेरक कहानियाँ

समकालीन साहित्य
भारतीय समकालीन साहित्य की उत्कृष्ठ कहानियाँ

कथा
सुब्बा राव
नंदीनी दास

चित्र
राम वाईरकर

संपादक
अनंत पै

मुखपृष्ठ
सी.एम.विटणकर

Amar Chitra Katha Pvt Ltd

ISBN 978-81-8482-359-2
Published by Amar Chitra Katha Pvt. Ltd., 204, 2nd Floor,
Dhantak Plaza, Makwana Road, Gamdevi, Marol, Andheri - 400059, India.
For Consumer Complaints Contact Tel : + 91-2249188881/2
Email: customerservice@ack-media.com


कुंभकर्ण
कुंभकर्ण लंका के शक्तिशाली राक्षस राजा, रावण का भाई था। वह बलवान तो था, लेकिन परले सिरे का दुष्ट था। अपने से कमजोर लोगों को डराने और सताने में उसे बड़ा आनंद आता था।
रावण, पता है आज मैंने क्या किया? दण्डकवन में घुसकर मुनियों को खूब डराया! हा! हा! उनकी भगदड़ देखने जैसी थी!
अच्छा किया, कुंभकर्ण! मुझे प्रसन्नता हुई।
लेकिन कुंभकर्ण की करतूत से उसके छोटे भाई विभीषण को दुःख हुआ।
कुंभकर्ण, उन मुनियों ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है? उन्हें शांति से जीने क्यों नहीं देते हो?

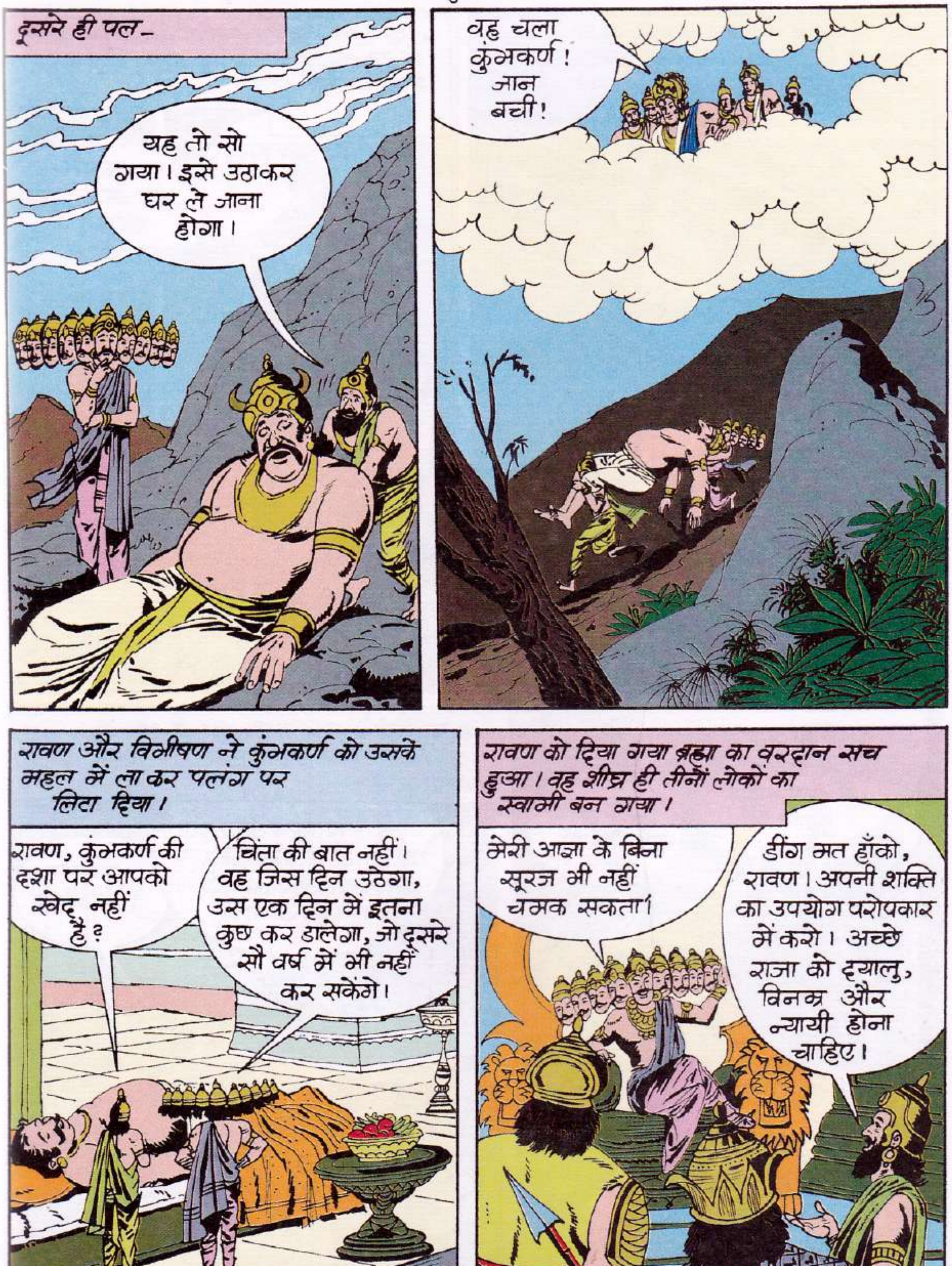

उसकी बात मत सुनो, कुंभकर्ण। जो जी में आये करो।
ऐसा करने से हमें इन्द्र का कोपभाजन बनना होगा।
देवराज इन्द्र सचमुच रुष्ट थे।
मैं कुंभकर्ण को मुनियों को सताने नहीं दूँगा। उसकी अक्ल ठिकाने लगा दूँगा।
और देवताओं की सेना लेकर इन्द्र ने कुंभकर्ण पर आक्रमण कर दिया।
कुंभकर्ण, तुम्हारी दुष्टता के लिए तुम्हें दंड देने आया हूँ।
आओ, इन्द्र। मैं तुम्हारी प्रतीक्षा ही कर रहा था।
इन्द्र ने कुंभकर्ण की ओर अपनी गदा फेंकी।


लेकिन–
अरे! वह तो उसे निगल गया!
तब कुंभकर्ण ने आगे कूद कर...
...इन्द्र के हाथी के चारों दाँत पकड़ लिये...
...और उसे दूर फेंक दिया।
इन्द्र की सेना घबरा कर भाग गयी।


जब कुंभकर्ण ने रावण को अपनी करनी बतायी-
तुम्हारा जवाब नहीं, कुंभकर्ण! तुम वीरों के वीर हो।
तब हम तीनों लोक क्यों नहीं जीत लेते?
अभी नहीं। हम शक्तिशाली जरूर हैं, फिर भी ब्रह्मा की उपासना कर के उनसे अधिक शक्ति प्राप्त करनी होगी।
तो चलो, वही करें।
तुम क्या सोचते हो, विभीषण?
मैं भी ब्रह्मा की उपासना करूँगा, पर किसी दूसरे उद्देश्य के लिए।
एक निर्जन, शांत स्थान पर जा कर तीनों भाई ब्रह्मा के ध्यान में लीन हो कर तप करने लगे।
ब्रह्मा ने प्रसन्न हो कर उन्हें दर्शन दिये।
रावण, तुम तीनों लोकों के स्वामी बनोगे।


इन्द्र को जब यह पता चला, तो वे चिंतित हो उठे।
कुंभकर्ण को ब्रह्मा वरदान दें, उसके पहले कुछ करना होगा।
वे वाणी की देवी सरस्वती के पास गये।
देवि सरस्वती, अब केवल आप हमें बचा सकती हैं।
कहिए, क्या मदद करूं?
जब कुंभकर्ण वरदान माँगने लगे तो क्या आप उसकी वाणी को प्रभा-वित कर सकेंगी?
समझ गयी। उसे एकदम मूर्खतापूर्ण वरदान माँगने के लिए प्रेरित कर दूँगी।
उधर, विभीषण को भी वरदान मिल गया था। अब कुंभकर्ण की बारी थी।
तुम्हारी क्या इच्छा है, कुंभकर्ण?


कुंभकर्ण के बोलने के पहले ही सरस्वती का जादू चल गया।
प्रभु! मैं हर समय सोते रहना चाहता हूँ।
कुंभकर्ण!
तुम रात-दिन चौबीसों घंटे सोते रहोगे।
प्रभु, मेरा भाई क्या माँग बैठा है, इसका उसे ज्ञान नहीं है। कृपा कर के वरदान वापस ले लीजिए।
एक बार दिया हुआ वरदान वापस नहीं लिया जाता।
पर, यदि वह रात-दिन सोता ही रहेगा, तो उसके शत्रु उसे मार डालेंगे!
प्रभु, बेचारे पर दया कीजिए।
ठीक है, हर छह महीने बाद वह एक दिन के लिए जाग सकेगा। लेकिन...
... यदि बीच में किसीने उसे जगाया तो उसकी जान खतरे में पड़ जायेगी।


दूसरे ही पल–
यह तो सो गया। इसे उठाकर घर ले जाना होगा।
वह चला कुंभकर्ण! जान बची!
रावण और विभीषण ने कुंभकर्ण को उसके महल में ला कर पलंग पर लिटा दिया।
रावण, कुंभकर्ण की दशा पर आपको खेद नहीं है?
चिंता की बात नहीं। वह जिस दिन उठेगा, उस एक दिन में इतना कुछ कर डालेगा, जो दूसरे सौ वर्ष में भी नहीं कर सकेंगे।
रावण को दिया गया ब्रह्मा का वरदान सच हुआ। वह शीघ्र ही तीनों लोकों का स्वामी बन गया।
मेरी आज्ञा के बिना सूरज भी नहीं चमक सकता।
डींग मत हाँको, रावण। अपनी शक्ति का उपयोग परोपकार में करो। अच्छे राजा को दयालु, विनम्र और न्यायी होना चाहिए।

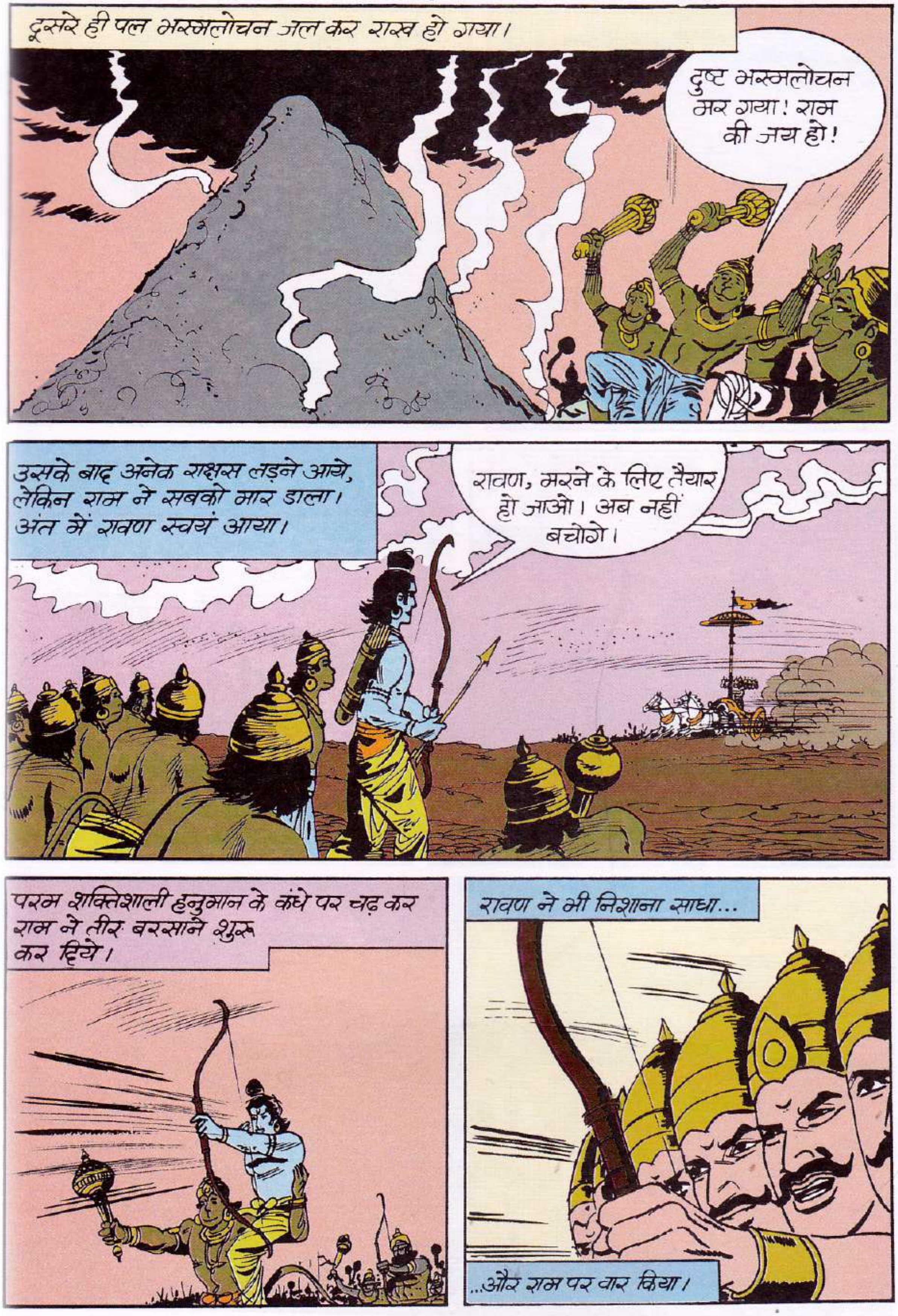

भाई की सलाह मानने के बजाय, रावण ने अयोध्या के राजकुमार राम की पत्नी, सीता का हरण किया।
हे राम! मेरी रक्षा करो...राम...
लंका लाकर रावण ने सीता को, अपने महल से दूर, अशोक वाटिका में रखा। विभीषण रावण के पास आया।
आपने ठीक नहीं किया। सीता राम की पत्नी हैं। उन्हें वापस कर आइए।
तुम्हारी यह मजाल! मुझे शिक्षा दे रहे हो!
आप सीता को राम के पास नहीं ले जाएँगे, तो मैं लंका त्याग दूँगा।
और मैं तुम्हें रोकूँगा नहीं।
वानर सेना के साथ राम लंका की ओर बढ़ रहे थे। विभीषण उनके पास चला आया।
राम, आप सत्य की राह पर हैं। मैं आपकी ओर से लड़ने और आपकी सेवा करने आया हूँ।
स्वागत है, विभीषण।



लंका पहुँचने के लिए राम ने वानरों की मदद से समुद्र पर पुल बनाया। लक्ष्मण बहुत प्रसन्न थे।
बस, अब रावण को हरा कर, सीता को ले आयेंगे।
काम कठिन है। लेकिन अंत में जीत हमारी होगी।
लंका में –
स्वामी, राम और उसके बंदर समुद्र पार कर रहे हैं। हमारे तट पर पहुँचने ही वाले हैं।
भस्मलोचन से कहो, मार कर भगा दे।
वह एक दृष्टि डालेगा कि सबके सब भस्म हो जायेंगे।
राम जब सेना सहित लंका के तट पर पहुँचे –
वह कैसा विचित्र योद्धा हमारी ओर आ रहा है? उसने अपनी आँखें क्यों ढँक रखी हैं?
वह भस्मलोचन है!

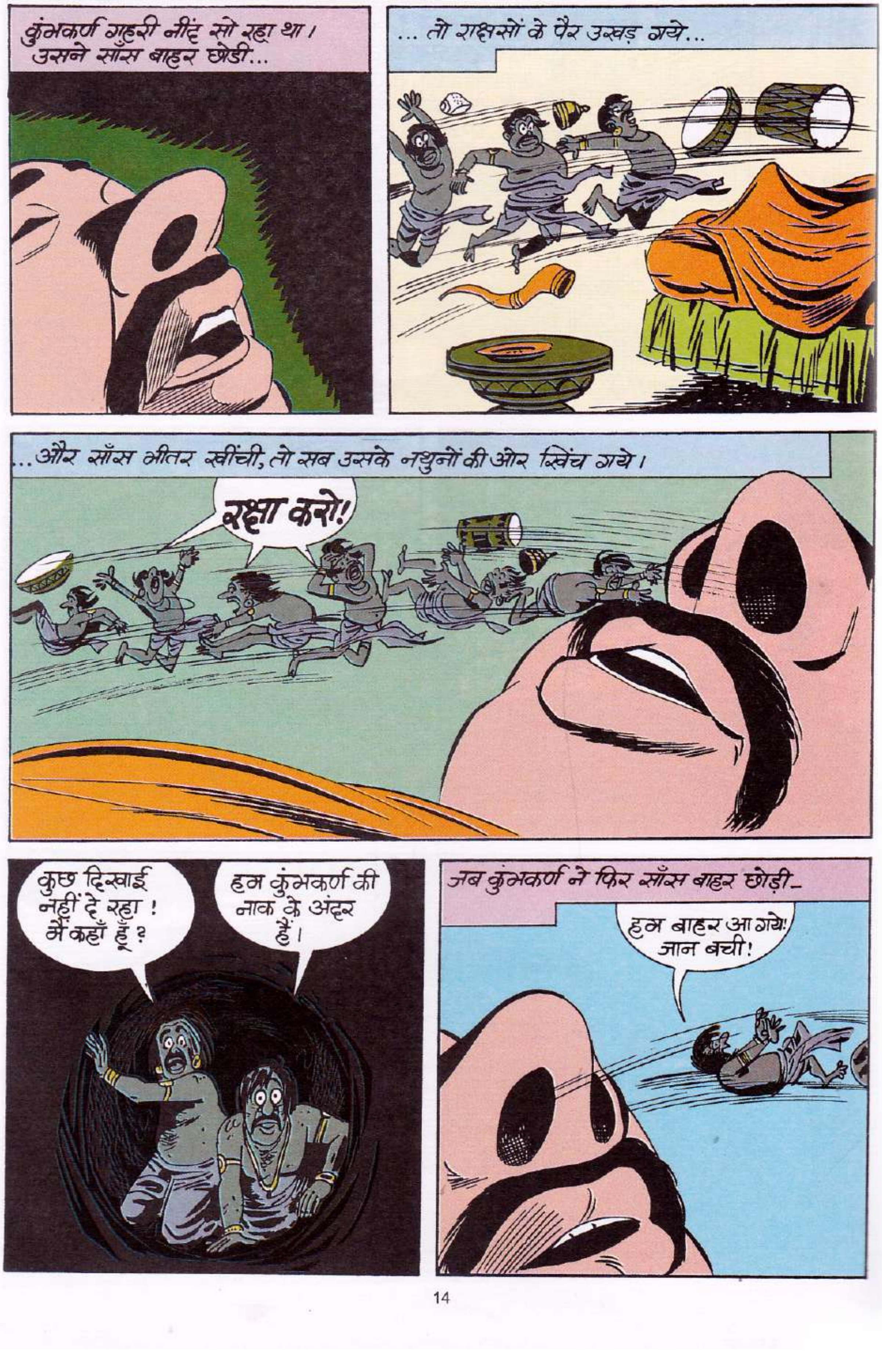


विभीषण, तुम इतने भयभीत क्यों हो?
भस्मलोचन जिसे भी देखेगा, वह जल कर राख हो जायेगा। वह हमारे पास आते ही आँखें खोल देगा।
उसपर दर्पण-अस्त्र चलाओ, अपना प्रतिबिंब देखकर वह खुद जल मरेगा।
राम ने तुरंत हजारों दर्पण भस्मलोचन की ओर फेंके।
भस्मलोचन के आँखें खोलने के पहले ही उसे दर्पणों ने घेर लिया।
राक्षस ने आँखें खोलने पर सैकड़ों अग्नि-उगलती आँखें देखीं। अपनी ही आँखों के प्रतिबिंब से वह जलने लगा।
नहीं!

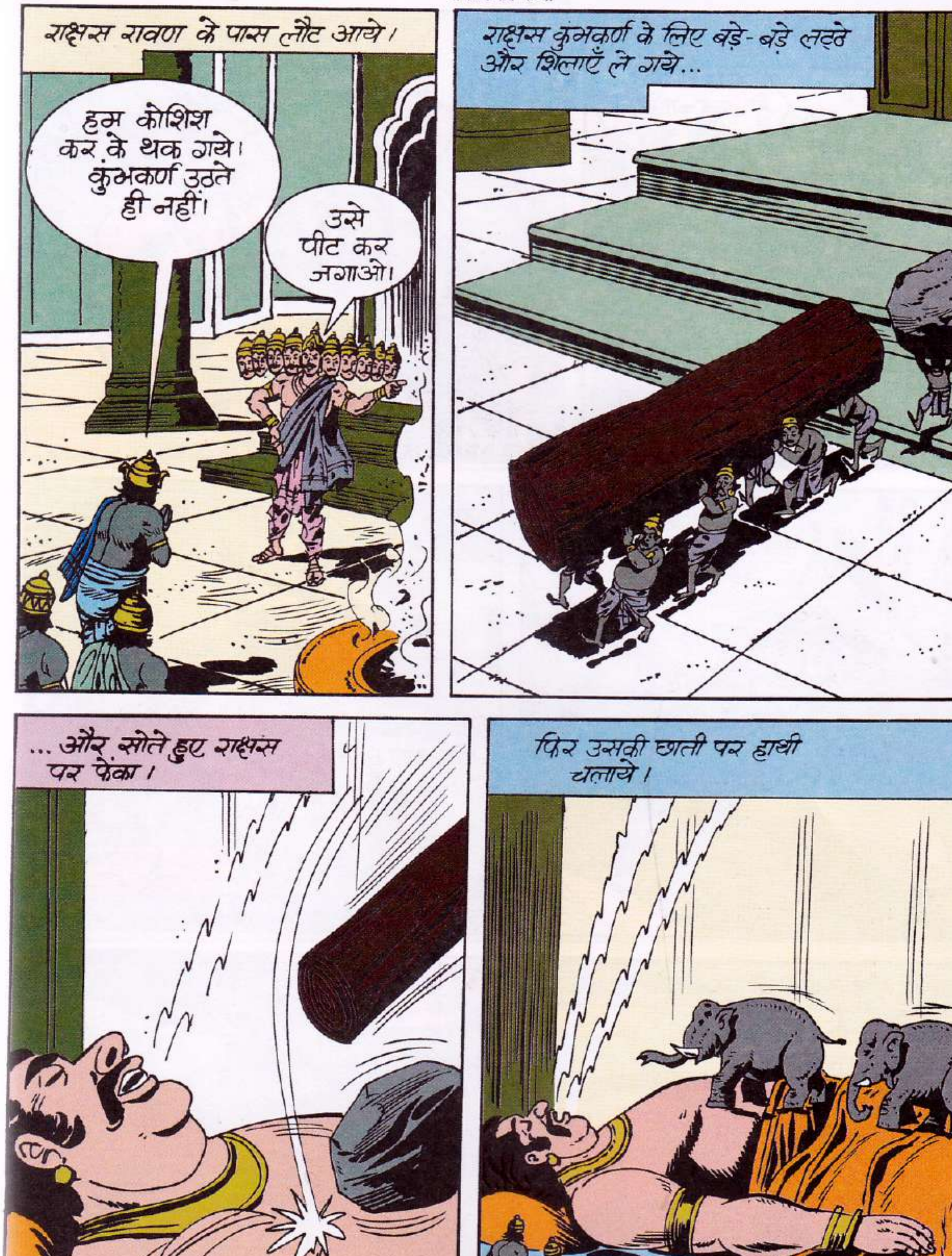

दूसरे ही पल भस्मलोचन जल कर राख हो गया।
दुष्ट भस्मलोचन मर गया! राम की जय हो!
उसके बाद अनेक राक्षस लड़ने आये, लेकिन राम ने सबको मार डाला। अंत में रावण स्वयं आया।
रावण, मरने के लिए तैयार हो जाओ। अब नहीं बचोगे।
परम शक्तिशाली हनुमान के कंधे पर चढ़ कर राम ने तीर बरसाने शुरू कर दिये।
रावण ने भी निशाना साधा...
...और राम पर वार किया।

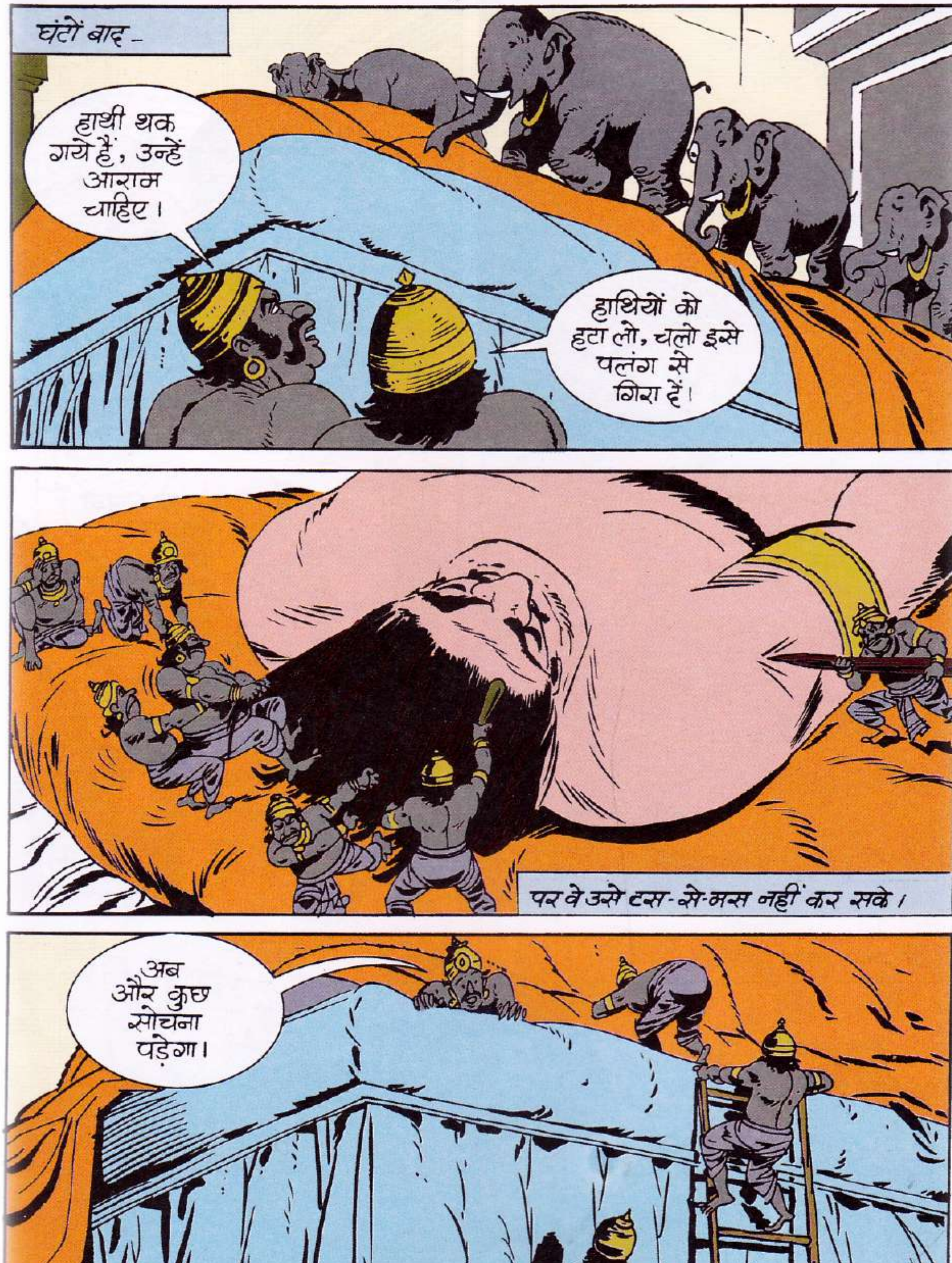

किंतु राम उससे ज्यादा फुर्तीले थे।
उनके शक्तिशाली तीरों से रावण मूर्च्छित हो गया।
किंतु ज़रा ही देर में वह फिर उठ खड़ा हुआ। लेकिन...
रावण, अपना मुकुट संभालो।
दूसरे ही पल, राम ने एक चंद्राकार अस्त्र रावण की ओर फेंका।
ज्योंही रावण के मुकुट उसके सिर से गिरे, वह भाग खड़ा हुआ।
मुझे महल ले चलो, जल्दी!


अब क्या करूँ ? मैं तो राजा हूँ, जब मुझे ही भागना पड़ा, तो प्रजा से क्या आशा कर सकता हूँ ?
कुंभकर्ण! अरे उसका ध्यान पहले क्यों नहीं आया ? राम को उठाकर समुद्र में फेंक देना तो मेरे भाई के लिए चुटकी बजाने जैसा खेल होगा।
जाओ, कुंभकर्ण को जगा कर हमारे पास भेजो।
हड़बड़ी में रावण ब्रह्मा की दी चेतावनी को भूल गया, कि यदि छह महीने से पहले कुंभकर्ण को जगाया गया तो उसकी जान खतरे में पड़ जायेगी।
राक्षस सेवक कुंभकर्ण के महल की ओर चले।

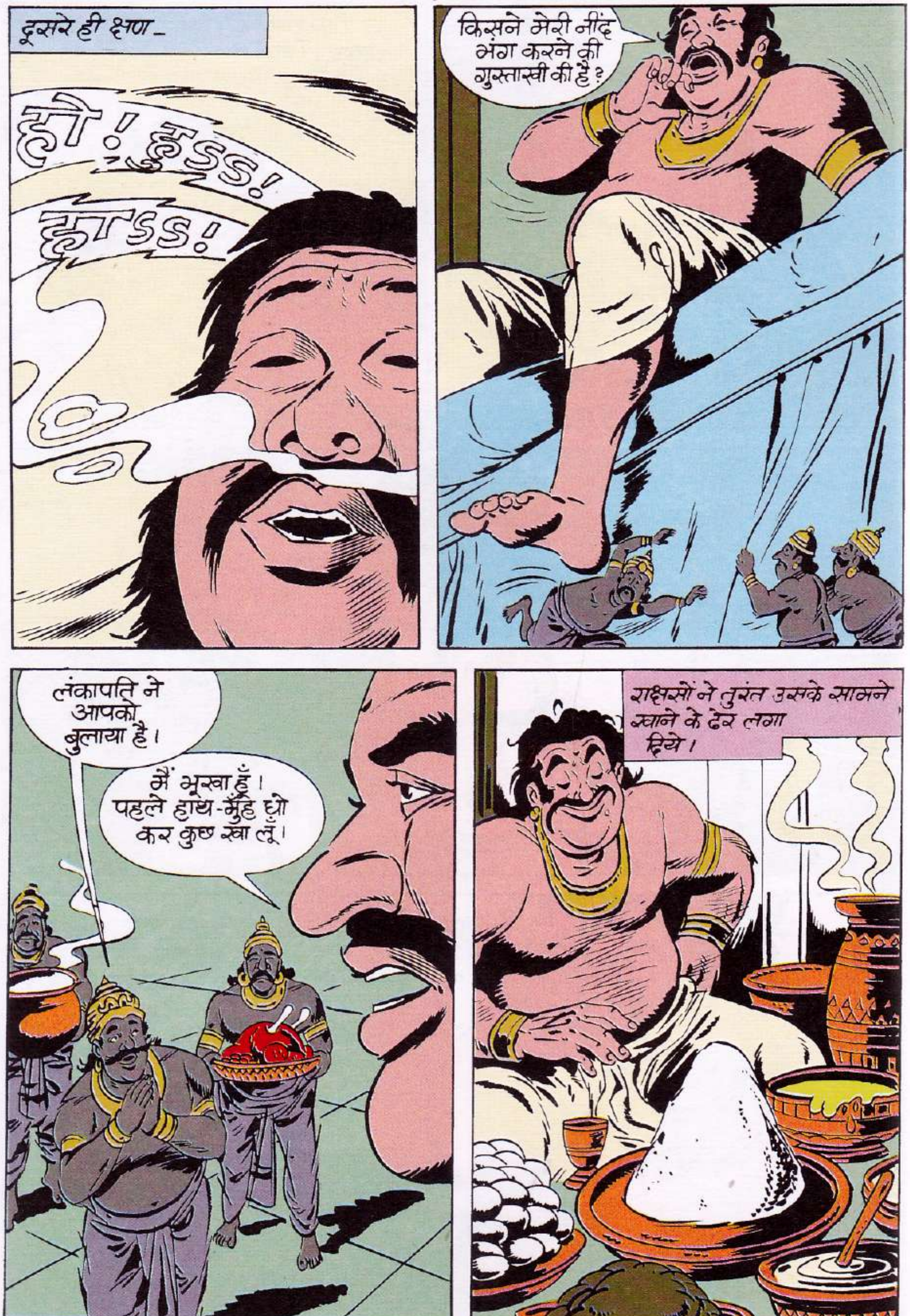

कुंभकर्ण गहरी नींद सो रहा था। उसने साँस बाहर छोड़ी...
... तो राक्षसों के पैर उखड़ गये...
...और साँस भीतर खींची, तो सब उसके नथुनों की ओर खिंच गये।
रक्षा करो!
कुछ दिखाई नहीं दे रहा! मैं कहाँ हूँ?
हम कुंभकर्ण की नाक के अंदर हैं।
जब कुंभकर्ण ने फिर साँस बाहर छोड़ी–
हम बाहर आ गये! जान बची!


सँभलो, वह साँस भीतर खींच रहा है!
हमें उसके सिर के पीछे हो जाना चाहिए।
इसे जगायें कैसे?
मिल कर शोर करें।
बेकार है। इसके तो खर्राटे भी नहीं थमे।
उन्होंने शीतल चंदन उसके ऊपर डाला।
यह तो और जोर से खर्राटे लेने लगा।
उन्होंने उसके कान में शंख फूँके।
लेकिन कुंभकर्ण तो गहरी नींद सोता रहा।

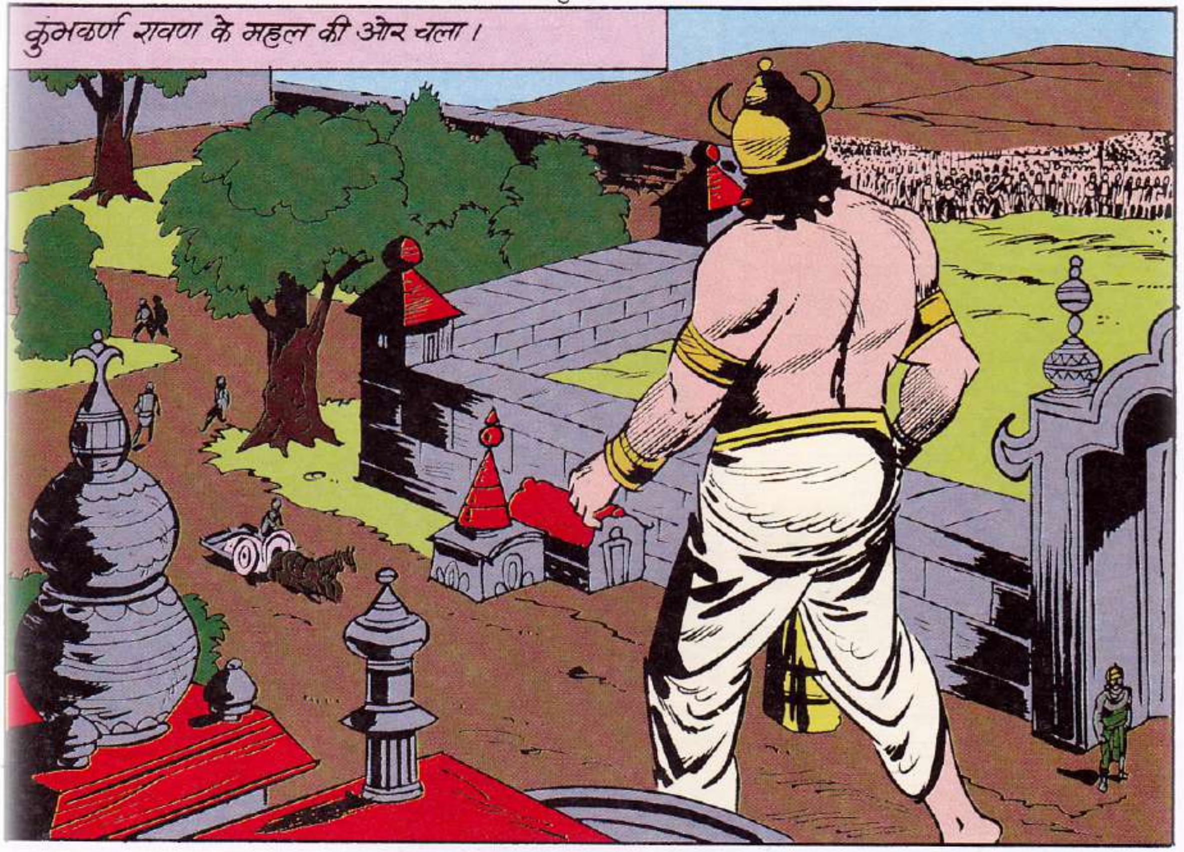

राक्षस रावण के पास लौट आये।
हम कोशिश कर के थक गये। कुंभकर्ण उठते ही नहीं।
उसे पीट कर जगाओ।
राक्षस कुंभकर्ण के लिए बड़े-बड़े लट्ठे और शिलाएँ ले गये...
... और सोते हुए राक्षस पर फेंका।
फिर उसकी छाती पर हाथी चलाये।


घंटों बाद -
हाथी थक गये हैं, उन्हें आराम चाहिए।
हाथियों को हटा लो, चलो इसे पलंग से गिरा दें।
पर वे उसे टस-से-मस नहीं कर सके।
अब और कुछ सोचना पड़ेगा।


मैं तो हार गया।
मैं थक गया हूँ, भूखा भी हूँ।
इस बलवान कुंभकर्ण को जगाने का उपाय मुझे सूझ गया।
क्या?
कुछ गरमागरम पकवान लाओ।
जब खाना लाया गया –
थाल खोल दो।


दूसरे ही क्षण –
हो! हुऽऽ!
हाऽऽ!
किसने मेरी नींद भंग करने की गुस्ताखी की है?
लंकापति ने आपको बुलाया है।
मैं भूखा हूँ। पहले हाथ-मुँह धो कर कुछ खा लूँ।
राक्षसों ने तुरंत उसके सामने खाने के ढेर लगा दिये।


कच-कच
वाह!
अब कुछ पीने को चाहिए, ताकि भोजन हज़्म हो जाये।
मुझे क्यों उठाया? इन्द्र ने फिर हमला किया है क्या? इस बार उसे मार ही डालूँगा।
इन्द्र नहीं, लेकिन मनुष्य और बंदर लंका पर हमला करने वाले हैं।


कुंभकर्ण रावण के महल की ओर चला।


आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?


आपको किसका डर है? मनुष्य और बंदरों से लड़ाई किस लिए?
यह लम्बी कहानी है...


रावण ने राम के साथ अपनी लड़ाई की पूरी बात कुंभकर्ण को बतायी।
राम तो कोई अलौकिक पुरुष लगता है। कहीं वह भगवान विष्णु का अव-तार तो नहीं?
असंभव! वह एक मामूली चतुर आदमी है। उसे मारना होगा।
सो तो कर दूँगा। दुश्मनों को मार कर नगर की रक्षा करना मेरा धर्म है।
मुझे तुमपर विश्वास है। तुम निडर और बलशाली हो। तुम्हारी सफलता निश्चित है।
कुंभकर्ण अकेला ही चल पड़ा।

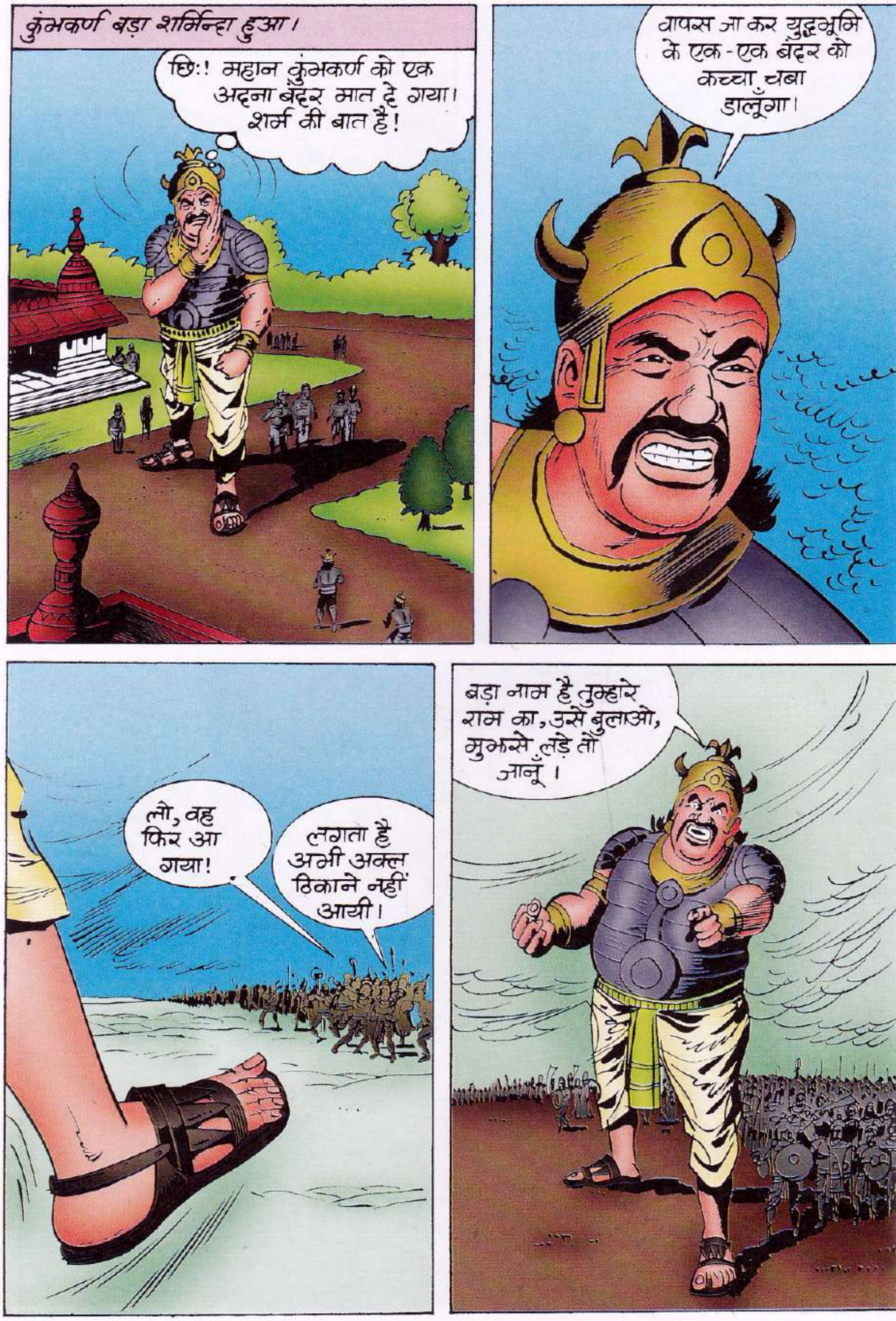

उसके थोड़ा पीछे, उसके दो हजार सेवक एक भारी-सा लौह-खंभ लादकर ला रहे थे। यही कुंभकर्ण का हथियार था।
उसके चलने से धरती हिलने लगी...
...समुद्र में लहरें ऊँची उछलने लगीं।
सारे वानर-योद्धा डर कर काँपने लगे।
इस दैत्य से भला हमारा क्या मुकाबला?

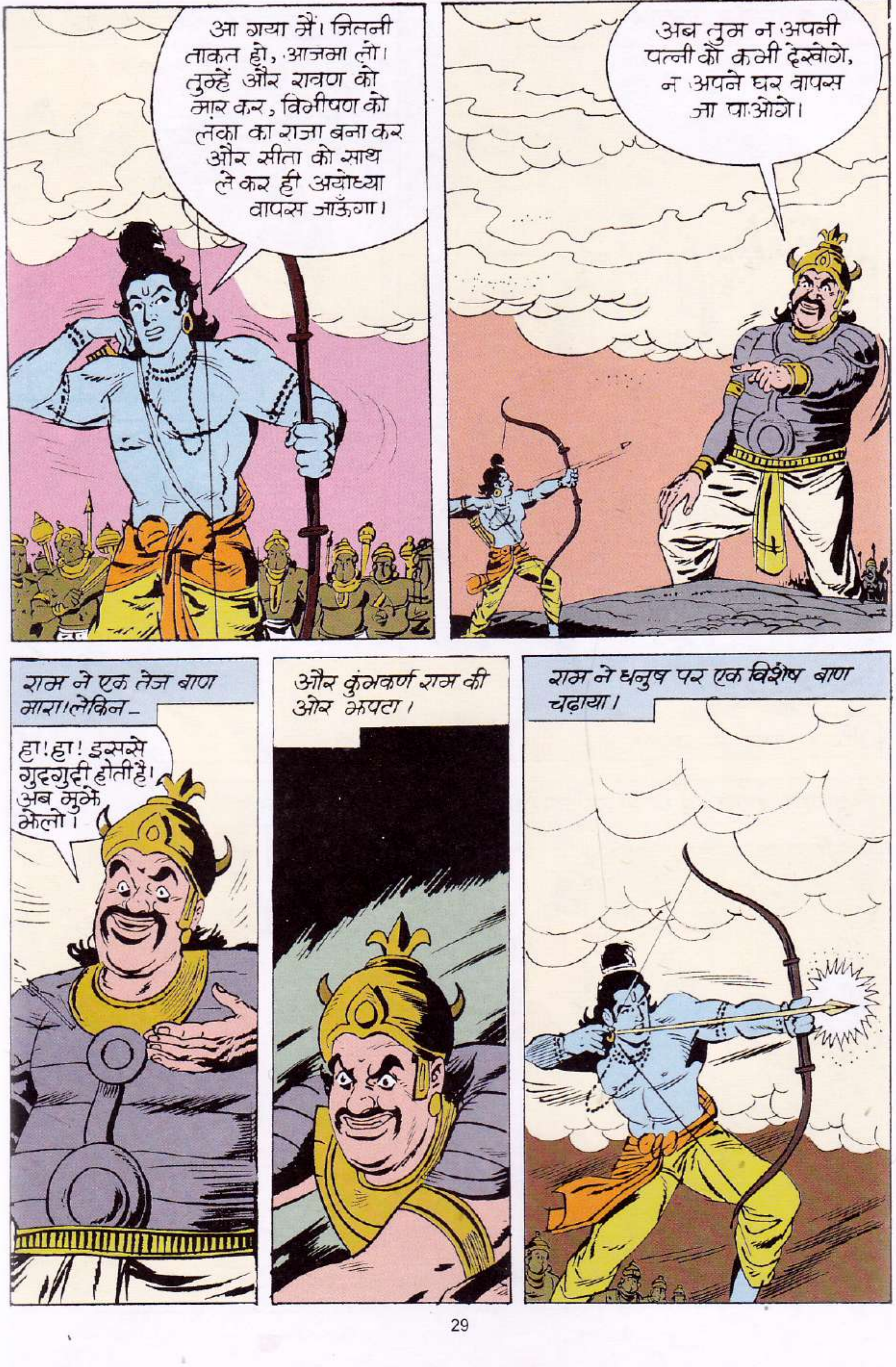

महाबली वानर, नील ने एक विशाल साल वृक्ष जड़ से उखाड़ा...
...और कुंभकर्ण की ओर झपट कर...
... उसके ऊपर दे मारा।
लेकिन पेड़ के ही टुकड़े-टुकड़े हो गये!
भागो!
और पेड़ लाने जा रहे हो? हा! हा! हा!


वानरराज सुग्रीव ने कुंभकर्ण को ललकारा।
कुंभकर्ण, आओ मुझसे मुष्टि-युद्ध करो। एक ही मुक्के से तुम्हें ठिकाने लगा दूंगा।
कुंभकर्ण ने अपना लौह-स्तंभ लेने को हाथ बढ़ाया।
लेकिन सुग्रीव ने झपट्टा मारा...
...और उसे तोड़ कर...
...जमीन पर पटक दिया।


तभी कुंभकर्ण ने सुग्रीव को उठा लिया...
...और रावण के महल की ओर चल दिया।
तुम्हें रावण को भेंट में दूँगा।
हाय! अब हम सुग्रीव को कभी न देख सकेंगे।
कुंभकर्ण नगर में से गुजर रहा था, तो सभी सुग्रीव का मजाक उड़ा रहे थे।
वह देखो! बंदर राजा की सवारी जा रही है।
किसी तरह पीछा छुड़ाना होगा!


अचानक, सुग्रीव ने कुंभकर्ण का कान काट खाया।
कुंभकर्ण ने छटपटा कर सुग्रीव को फेंक दिया।
सुग्रीव मौका पा कर तेजी से भाग निकला।


कुंभकर्ण बड़ा शर्मिन्दा हुआ।
छिः! महान कुंभकर्ण को एक अदना बंदर मात दे गया। शर्म की बात है!
वापस जा कर युद्धभूमि के एक-एक बंदर को कच्चा चबा डालूँगा।
लो, वह फिर आ गया!
लगता है अभी अक्ल ठिकाने नहीं आयी।
बड़ा नाम है तुम्हारे राम का, उसे बुलाओ, मुझसे लड़े तो जानूँ।


आ गया मैं। जितनी ताकत हो, आजमा लो। तुम्हें और रावण को मार कर, विभीषण को लंका का राजा बना कर और सीता को साथ ले कर ही अयोध्या वापस जाऊँगा।
अब तुम न अपनी पत्नी को कभी देखोगे, न अपने घर वापस जा पाओगे।
राम ने एक तेज बाण मारा। लेकिन –
हा! हा! इससे गुदगुदी होती है। अब मुझे झेलो।
और कुंभकर्ण राम की ओर झपटा।
राम ने धनुष पर एक विशेष बाण चढ़ाया।


बाण का निशाना अचूक बैठा।
AAGHH!!
और कुंभकर्ण मर गया।
जब रावण को समाचार मिला–
हाय! ब्रह्मा की चेतावनी के बावजूद मैंने अपने भाई को क्यों जगाया?
मैं उसकी मौत का बदला लूँगा। राम को मार डालूँगा।
किंतु राम-रावण युद्ध में रावण मारा गया। राम ने विभीषण को लंका का राजा बनाया...
... और सीता तथा लक्ष्मण के साथ अपनी राजधानी, अयोध्या नगरी वापस चले गये।

महाकाव्य और
पौराणिक कथाएँ

कुंभकर्ण

राम भारतीय जन मानस में अत्यंत पूजनीय हैं। देश के अनेक रचनाकारों ने अपनी - अपनी शैली में राम कथा का वर्णन किया है। महर्षि वाल्मीकि ने संस्कृत में रामायण महाकाव्य की रचना की जो आज भी लेखकों को प्रेरणा प्रदान करती है। संत तुलसीदास ने सरल और सुबोध अवधी में मानस की रचना की, जो जन साधारण में लोकप्रिय हुई। भारत की सभी भाषाओं में राम कथा को काव्य, नाटक और उपन्यास आदि विभिन्न विधाओं में लिखा जाता रहा है। लगभग ५०० वर्ष पूर्व कृत्तिवास ने बांगला भाषा में रामायण लिखी थी। उनकी काव्य रचना सरल, सीधी भाषा एवं लोक शैली में थी, इसलिए जन मानस को यह अपनी कृति लगी। तुलसी के राम, मर्यादा पुरुषोत्तम थे और उन्होंने राम को आराध्य मान कर उन्हें महिमा मंडित किया। परंतु कृत्तिवास ने अपनी रामायण में राम का गुणगान करते हुए रावण के भाई, कुंभकर्ण, को भी उजागर किया। प्रस्तुत कथा, कुंभकर्ण, बांगला भाषा की उसी रामायण पर आधारित है।

अमर चित्र कथा के अन्य महाकाव्य (वीर गाथाएं) और पौराणिक कथा :

ISBN 978-81-8482-359-2
9 788184 823592